

Shri Bhairav Dev Aarti

The evening aarti to Lord Bhairav

भगवान भैरव की आरती

The aarti sung to Lord Bhairav. The full aarti comes first for singing straight through, then each verse with its meaning in English and Hindi.

The full text सम्पूर्ण पाठ

श्री भैरव देव आरती

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक ।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
तेल चटकी दधि मिश्रित भाषावलि तेरी ।
कृपा कीजिये भैरव, करिए नहीं देरी ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
पाँव घुँघरू बाजत अरु डमरू डमकावत ।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हरषावत ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥
बटुकनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे ॥
॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

About this text परिचय

Bhairav is the fierce form of Shiva, the guardian who keeps fear and harm away. He is shown with a trident, riding a dog, and in Kashi he is honoured as the city's protector. In his gentle child form he is Batuk Bhairav, "Batuknath", whom the later verses of this aarti praise.

This is a devotional song in Hindi, not a Sanskrit hymn from a scripture. Like many aartis, it carries its poet's name in its last verse: "kahe Dharanidhar", "so says Dharanidhar". It is sung while the lamp is waved before Bhairav, with the refrain repeated after each verse.

भैरव भगवान शिव का उग्र रूप हैं, वे रक्षक जो भय और अनिष्ट को दूर रखते हैं। उन्हें त्रिशूल धारण किए, श्वान (कुत्ते) पर सवार दिखाया जाता है, और काशी में वे नगर के रक्षक (कोतवाल) के रूप में पूजे जाते हैं। उनका सौम्य बाल रूप बटुक भैरव, अर्थात् "बटुकनाथ" है, जिनकी स्तुति इस आरती के अंतिम पदों में है।

यह हिन्दी का भक्ति गीत है, किसी शास्त्र का संस्कृत स्तोत्र नहीं। अनेक आरतियों की तरह इसके अंतिम पद में कवि का नाम है: "कहे धरणीधर"। भैरव के सामने दीपक घुमाते हुए यह गाई जाती है, और हर पद के बाद टेक दोहराई जाती है।

Deity देवता	Bhairav, the fierce form of Shiva; Batuk Bhairav	भैरव, शिव का उग्र रूप; बटुक भैरव
Composed by रचयिता	The poet Dharanidhar, as the last verse states	कवि धरणीधर (अंतिम पद के अनुसार)
Language भाषा	Hindi (devotional song, not scripture)	हिन्दी (भक्ति गीत, शास्त्र नहीं)
Where it is found स्रोत	Popular aarti collections; sung in temples and homes across North India	प्रचलित आरती संग्रह; उत्तर भारत के मंदिरों और घरों में गाई जाती है
Day often chosen दिन	Sunday or Tuesday, and Bhairav Ashtami	रविवार या मंगलवार, और भैरव अष्टमी

How it is recited पाठ की विधि

Light a lamp, ideally a four-wicked one as the fourth verse describes, and wave it before Bhairav's image while singing. The refrain is repeated after every verse. Many households offer the aarti on Sundays or Tuesdays, and on Bhairav Ashtami.

दीपक जलाएँ, हो सके तो चौमुखा दीपक, जैसा चौथे पद में कहा गया है, और गाते हुए भैरव की प्रतिमा के सामने उसे घुमाएँ। हर पद के बाद टेक दोहराई जाती है। अनेक घरों में यह आरती रविवार या मंगलवार को, और भैरव अष्टमी पर की जाती है।

Verse by verse, with meaning श्लोक, अर्थ सहित

Each verse again, with its meaning in English and Hindi.

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा ॥

MEANING

Victory to you, Lord Bhairav; victory to Lord Bhairav, whom the goddesses Kali and Gaura (Gauri) serve.

अर्थ

हे भैरव देव, आपकी जय हो; प्रभु भैरव देव, आपकी जय हो, जिनकी सेवा देवी काली और गौरा (गौरी) करती हैं।

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

तुम्ही पाप उद्धारक दुःख सिन्धु तारक ।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥

MEANING

You alone lift us out of sin and carry us across the ocean of sorrow. You bring joy to your devotees, and you bear a fearsome form.

अर्थ

आप ही पापों से उद्धार करने वाले और दुःख के सागर से पार लगाने वाले हैं। आप भक्तों को सुख देने वाले और भीषण रूप धारण करने वाले हैं।

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥

MEANING

You ride upon a dog and hold the trident in your hand. Your glory has no measure. Victory, victory to you, remover of fear.

अर्थ

श्वान आपका वाहन है और आपके हाथ में त्रिशूल है। आपकी महिमा अपार है। हे भय हरने वाले, आपकी जय हो, जय हो।

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन दुःख खोवे ॥

MEANING

Without you, O Lord, no worship bears fruit. The sight of the four-wicked lamp takes sorrow away.

अर्थ

हे देव, आपके बिना कोई सेवा सफल नहीं होती। चौमुखे दीपक का दर्शन दुःख दूर करता है।

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

तेल चटकी दधि मिश्रित भाषावलि तेरी ।
कृपा कीजिये भैरव, करिए नहीं देरी ॥

MEANING

Oil, crisp fried offerings mixed with curd, and this string of words in your praise are yours. Show your mercy, Bhairav, and do not delay.

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

अर्थ

तेल, चटकी (तली हुई वस्तुएँ), दही मिश्रित भोग और यह वाणी की माला आपकी है। हे भैरव, कृपा कीजिए, देरी मत कीजिए।

पाँव घुँघरू बाजत अरु डमरू डमकावत ।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हरषावत ॥

MEANING

The bells on your feet ring and your damaru drum sounds. Taking the form of a child as Batuknath, you delight the hearts of the people.

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

अर्थ

आपके पाँवों में घुँघरू बजते हैं और डमरू डमडमाता है। बटुकनाथ के रूप में बालक बनकर आप लोगों के मन को हर्षित करते हैं।

बटुकनाथ जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे ॥

MEANING

Whoever sings this aarti of Batuknath, says Dharanidhar, receives the fruit the heart desires.

॥ जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा ॥

अर्थ

धरणीधर कहते हैं: जो कोई बटुकनाथ जी की यह आरती गाता है, वह मनचाहा फल पाता है।

Texts referred to संदर्भ ग्रंथ

1. The aarti as sung in North Indian temples and printed in popular aarti collections; its last verse names the poet, Dharanidhar.
2. *Shiva Purana*, Shatarudra Samhita: the account of Bhairava's appearance as a form of Shiva.

Not sure which practice suits your chart?

The right hymn, and the right time for it, depends on your own chart and its periods. Ask one focused question and receive a written answer worked out from your birth chart.

आपकी कुंडली के लिए कौन सा पाठ उचित है, यह जानने के लिए अपना एक प्रश्न पूछें।

astroshala.com/product/ask-a-question

Shared for devotion and study. Recitation is traditional practice and carries no promise of a particular result; it is not a substitute for medical, legal, or financial advice. © AstroShala.com

Notes and recitation record टिप्पणी और पाठ का विवरण